

डॉ. एंथनी जे. टॉमसिनो, यहूदी धर्म, सत्र 5, सिकंदर महान

© 2024 टोनी टॉमसिनो और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. एंथनी टॉमसिनो द्वारा यीशु से पहले यहूदी धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 5 है, सिकंदर महान।

तो, हम फारस और ग्रीस के बीच संघर्ष के बारे में बात कर रहे हैं।

इतिहास के इस मोड़ पर, फारस ने खुद को वित्तीय रूप से उसी तरह की सैन्य उपस्थिति बनाए रखने में असमर्थ पाया है जो उसके पास पहले थी। इसलिए, फारस द्वारा ग्रीस पर आक्रमण करने के दिन अब लगभग समाप्त हो चुके हैं। हालाँकि, यूनानियों की याददाश्त बहुत अच्छी है, और वे क्षमाशील नहीं हैं।

और इसलिए हम पाते हैं कि यूनानी अभी भी बदला लेने की तलाश में हैं। अधिकांश भाग के लिए, वे उन महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में असमर्थ हैं क्योंकि वे एक-दूसरे से लड़ने और एक-दूसरे से नफरत करने और इस तरह की सभी अच्छी चीजों में व्यस्त हैं। आखिरकार, यूनानी किसी ऐसे व्यक्ति के शासन में एकजुट हो गए जो एक तरह से अप्रत्याशित था क्योंकि वह वास्तव में बिल्कुल भी यूनानी नहीं था।

मैं मैसेडोन के फिलिप नामक व्यक्ति के बारे में बात कर रहा हूँ। तो, जब हम सिकंदर महान के बारे में बात करते हैं तो क्या होता है। आप जानते हैं, कभी-कभी हमें आश्चर्य होता है कि जब हम साइरस के बारे में बात करते हैं तो इनमें से कुछ लोगों में ऐसी क्या महानता थी और साइरस ने वास्तव में महान सिकंदर की उपाधि क्यों अर्जित की।

खैर, यह उनके व्यक्तित्व या उनकी धार्मिकता या अच्छाई या इस तरह की किसी भी चीज़ से ज़्यादा नहीं है जिसने उन्हें यह उपाधि अर्जित करने में मदद की। उनके लिए, यह वास्तव में उनकी उपलब्धियाँ हैं, क्योंकि दुनिया के इतिहास में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसने सिकंदर महान जितना बड़ा प्रभाव डाला हो। और वह व्यक्ति, खैर, आप जानते हैं, यीशु के अलावा।

लेकिन वैसे भी, वह व्यक्ति केवल 33 वर्ष तक जीवित रहा, जो कि, आप जानते हैं, यीशु के अलावा, कितने लोगों ने इतने कम जीवन में इतना कुछ हासिल किया है? लेकिन उनके प्रशासन, उनके अभियानों, और इसी तरह, दुनिया का केंद्र वास्तव में झुक गया। यह पूर्व में था, यह बेबीलोनियों और फारसियों के साथ मध्य पूर्व में था, और अब अचानक, दुनिया का पूरा केंद्र पश्चिम की ओर स्थानांतरित होने जा रहा है, और यूनानी प्रमुख होने जा रहे हैं, और फिर रोमन। तो, आज हम जिस दुनिया को जानते हैं, वह काफी हद तक सिकंदर महान द्वारा बनाई गई थी।

मेरा मतलब है, आप अक्सर कुछ ऐसा कह सकते हैं, अगर वह नहीं होता, तो कोई और होता। लेकिन हम वास्तव में नहीं जानते, आप जानते हैं? तो, 10 वर्षों में, उसने दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा साम्राज्य बनाया। यह बहुत प्रभावशाली है।

उन्होंने पश्चिमी और पूर्वी विचारों के सम्मिश्रण को एक नई सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में प्रोत्साहित किया जिसे हम हेलेनिज्म कहते हैं। और हम यहाँ एक या दो मिनट में इसके बारे में थोड़ा और बात करने जा रहे हैं। तो, चलिए थोड़ा पीछे चलते हैं और बात करते हैं कि वह कहाँ से आए थे।

सिकंदर की उत्पत्ति। मैंने पहले ही उसके पिता फिलिप का जिक्र किया है। सिकंदर मैसेडोनिया से था।

अब, यहाँ देखिए। यह मैसेडोनिया है। ग्रीस, बेशक, यहाँ नीचे है।

इसलिए, यूनानियों द्वारा मैसेडोनियन लोगों को कुछ हद तक बर्बर माना जाता था। वे यूनानियों जितने सुसंस्कृत नहीं थे। लेकिन वे निकट पड़ोसी थे और वे काफी शक्तिशाली हो रहे थे और वे यूनानियों के बीच सभी झगड़ों में शामिल हो जाते थे।

आखिरकार, उन्होंने इस कला में महारत हासिल करना शुरू कर दिया जो वे यूनानियों से सीख रहे थे - यह कला, खैर, राजनीतिज्ञता की नहीं बल्कि युद्धकला की कला थी। वह फिलिप का बेटा है।

फिलिप मैसेडोन का राजा था। वह इन महान झड़पों में से एक में पकड़ा गया था। जब वह युद्ध बंदी था, तो उसने अपने विजेताओं की युद्ध रणनीति का अध्ययन किया।

उन्होंने उनमें सुधार किया। अपने नए ज्ञान का उपयोग करते हुए, उन्होंने कई यूनानी शहर-राज्यों पर विजय प्राप्त की और उन्हें मैसेडोनियन के अधीन एक एकल राज्य में एकीकृत किया। खैर, यूनानियों को यह बहुत पसंद नहीं आया क्योंकि वे वास्तव में मैसेडोनियन को पसंद नहीं करते थे।

लेकिन इस मामले में उनके पास ज़्यादा विकल्प नहीं थे क्योंकि इस समय तक मैसेडोनियन मज़बूत हो चुके थे। ऐसी अफ़वाहें उड़ रही थीं कि सिकंदर, जब पैदा हुआ था, तो असल में ज़्यूस का बेटा था। फिलिप ने इन अफ़वाहों को बढ़ावा नहीं दिया।

हालांकि, उन्हें शायद सिकंदर की मां ओलंपिया द्वारा प्रोत्साहित किया गया था। उसके बारे में अफ़वाह थी कि वह एक चुड़ैल थी जो सांपों के साथ सोती थी, और यह विचार था कि उसे ज़ीउस ने एक सांप के रूप में गर्भवती किया था।

और इसलिए यही कारण है कि सिकंदर वास्तव में एक साधारण नश्वर व्यक्ति नहीं था, बल्कि वह नश्वर से कहीं बढ़कर था। अब, फिलिप अपने बेटे को सर्वोत्तम संभव ग्रीक शैली की शिक्षा देना चाहता था। इसलिए, उसने अपने लड़के के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया, जिसका नाम शायद आप पहचानते हों।

ग्रीक दार्शनिक अरस्तू उनके शिक्षक थे। अपनी शिक्षा के माध्यम से, सिकंदर को ग्रीक संस्कृति से प्यार हो गया और सभी यूनानियों की तरह, वह ग्रीक संस्कृति को दुनिया की सभी अन्य संस्कृतियों से बेहतर मानने लगा।

यह सिकंदर की माँ ओलंपिया का चित्रण है। या ओलंपियास, जैसा कि आप इसे लिखा हुआ भी देखेंगे। और जैसा कि मैंने कहा, वह एक बहुत शक्तिशाली और महत्वाकांक्षी महिला थी, जैसा कि उस समय की कई महिलाएँ थीं।

आपको कई बार ऐसा महसूस होता है कि फिलिप उससे डरता था, और शायद अच्छे कारण से। सिकंदर के पिता फिलिप एक शक्तिशाली व्यक्ति थे, शारीरिक रूप से एक शानदार व्यक्ति थे, और एक बहुत ही सक्षम योद्धा थे। इसलिए फिलिप की हत्या के बाद 336 में सिकंदर राजा बन गया।

अफ़वाहें हैं कि उसकी हत्या उसकी पत्नी ओलंपियास द्वारा नियुक्त लोगों द्वारा की गई थी, जो चाहती थी कि उसका बेटा राजा बने। सिकंदर 20 साल का था जब वह ग्रीक साम्राज्य का राजा बना। बेशक, तुरंत ही ग्रीक शहर-राज्यों ने उसकी हिम्मत को परखने का फैसला किया।

उनमें से कई ने विद्रोह कर दिया, सबसे ज़्यादा थेब्स शहर ने। इस समय, सिकंदर को लगा कि उसे बल और ताकत दिखाना ज़रूरी है।

इसलिए उसने कई विद्रोहों को दबा दिया, सबसे पहले उत्तर की ओर। लेकिन थेब्स के लोगों के खिलाफ उसकी क्रूरता कुछ हद तक पौराणिक बन गई है। जब उसकी सेना ने थेब्स पर कब्ज़ा किया, तो उन्होंने शहर को नष्ट कर दिया, इसकी इमारतों को जला दिया और इसके लोगों को मार डाला।

पुरुषों, महिलाओं और बच्चों का कत्लेआम किया गया। और सिकंदर का डर अन्य यूनानी शहर-राज्यों में भी फैल गया। और बहुत से लोग जल्दी ही उसके साथ हो गए और उसे अपना नेता मान लिया।

तो, अब सिकंदर अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए आगे बढ़ता है। फिलिप की महत्वाकांक्षा पहले से ही फारस पर आक्रमण करने की थी। उसके मन में ये विचार थे।

याद रखें कि एक समय में फारस ने मैसेडोन, मैसेडोनिया पर विजय प्राप्त की थी। और, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, मैसेडोनियन इसे भूले नहीं थे। उन्होंने इस तथ्य पर आक्रमण का दिखावा किया कि उनके पास एशिया माइनर के साथ ये यूनानी उपनिवेश थे, जिन पर फारसियों का प्रभुत्व था।

और इसलिए, विचार यह था कि यह ग्रीक सेनाओं के लिए एक महान धर्मयुद्ध होगा जो पार करके उन ग्रीक उपनिवेशों को मुक्त करेगा, ताकि ग्रीक लोग ग्रीक होने के लिए स्वतंत्र हो सकें।

खैर, 334 ईसा पूर्व में, सिकंदर ने 40,000 सैनिकों की एक सेना इकट्ठी की। और वह डार्डनेल्स को पार करके एशिया में चला गया।

अब, जैसा कि हमने कहा, उसका प्रारंभिक लक्ष्य बस कुछ यूनानी उपनिवेशों को मुक्त कराना था और फिर संभवतः वापस जाकर एक बड़ी सेना या ऐसा ही कुछ लेकर वापस आना था। लेकिन जो हुआ, वह यह था कि जब उसने एशिया माइनर में मार्च किया, तो उसे व्यावहारिक रूप से कोई प्रतिरोध नहीं मिला। और यह सिकंदर के लिए आश्चर्य की बात रही होगी।

यह कुछ हद तक दर्शाता है कि इस समय तक फारस के शासक कितने अक्षम हो चुके थे। क्योंकि हर कोई जानता था कि सिकंदर आक्रमण करने वाला है। यह कोई बहुत बड़ा रहस्य नहीं था।

फिर भी, उन्होंने उस सीमा को मज़बूत करने के लिए कुछ नहीं किया। सिकंदर और उसके सैनिक निश्चित रूप से इस तथ्य से उत्साहित थे कि ऐसा लग रहा था कि यह कुछ हद तक आसान होने वाला था। इसलिए उन्होंने यूनानी उपनिवेशों को आज्ञाद कर दिया और फिर एशिया माइनर से अपना मार्च शुरू किया।

इस यात्रा के दौरान सबसे पहले एक पड़ाव फ्रीगिया में गॉर्डियम नामक स्थान पर पड़ा, जो एशिया माइनर के ठीक बीच में है। अब, यहाँ, गॉर्डियन गाँठ के बारे में एक लंबी किंवदंती है। और विचार यह था, और इस कहानी के कई अलग-अलग संस्करण हैं, लेकिन मूल रूप से विचार यह था कि एक विशाल, अटूट गाँठ थी जो एक बैल के जुए की तरह बंधी हुई थी।

गॉर्डियम के लोगों ने जो किंवदंती सुनाई थी, उसके अनुसार भविष्यवाणी की गई थी कि जो कोई भी उस गाँठ को खोल देगा, वह दुनिया का शासक बन जाएगा। खैर, सिकंदर ने गाँठ को देखा, उसे यहाँ थोड़ा खींचा, वहाँ थोड़ा खींचा। फिर, उसने अपनी तलवार निकाली और गाँठ को आधा काट दिया।

जैसा कि हम कहते हैं, गॉर्डियन गाँठ को काटना, जो कि थोड़ा अनुचित और थोड़ा कम कोषेर लगता था। लेकिन, हे, आप जानते हैं, यह काम कर गया। और हर किसी ने इसे सिकंदर की आने वाली विजय के शगुन के रूप में देखा।

तो, डेरियस III को हराना। पहली बार जब सिकंदर की सेना ने वास्तव में फ़ारसी सैनिकों के एक बड़े समूह का सामना किया, तो वह ग्रैनिकस में हुआ। इस मामले में, फिर से, ग्रीक स्रोतों द्वारा संख्याएँ लगभग निश्चित रूप से अतिरंजित हैं क्योंकि, आप जानते हैं, वे उन्हें अविश्वसनीय रूप से उल्लेखनीय, अलौकिक जीत बताना चाहते हैं।

लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि सिकंदर ने जिन सेनाओं का सामना किया, वे उसकी 40,000 की सेना से कहीं ज़्यादा बड़ी थीं। और उन्होंने ग्रैनिकस में आसान जीत हासिल की। और यूनानियों द्वारा संरक्षित अभिलेखों के अनुसार, झड़प में उसकी सेना ने केवल 110 लोगों को खोया।

तो, यह पहली बड़ी तरह की लड़ाई थी। इस्सस की लड़ाई में पहली बार सिकंदर का सामना एक ऐसी सेना से हुआ जिसका नेतृत्व खुद राजा डेरियस कर रहा था। एक बार फिर, यूनानियों ने आसान जीत हासिल की और डेरियस III को भागने पर मजबूर होना पड़ा।

उसे व्यक्तिगत रूप से जाना पड़ा। उसने अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ दिया। अलेक्जेंडर ने उन्हें अपने घर में ले लिया और उन्हें सम्मानित अतिथि के रूप में रखा, जो उसके लिए बहुत बड़ा श्रेय था।

यह हमें इस सवाल पर वापस लाता है कि सिकंदर की अपेक्षाकृत छोटी सेना इन बहुत बड़ी फ़ारसी सेनाओं का सामना कैसे कर पाई। हम पहले ही कवच की श्रेष्ठता के बारे में थोड़ी बात कर चुके हैं, लेकिन यहाँ हम जिस प्रकार की सेना की बात कर रहे हैं उसकी श्रेष्ठता भी है।

यूनानी सैनिक युद्ध के अनुभवी योद्धा थे। वे एक दूसरे के खिलाफ लड़ रहे थे क्योंकि सभी यूनानी शहर-राज्य लगातार एक दूसरे के खिलाफ युद्ध में थे। स्पार्टन्स जैसे लोग बचपन से ही योद्धा बनने के लिए प्रशिक्षित होने के लिए प्रसिद्ध हैं।

लेकिन वे अकेले नहीं थे। एथेंस, थेबंस, आयोनियन, ग्रीस के ये सभी विभिन्न शहर-राज्य लगातार अभ्यास और प्रशिक्षण कर रहे थे ताकि युवा बड़े होकर सैनिक बन सकें जो अन्य शहर-राज्यों के खिलाफ लड़ सकें और अपनी श्रेष्ठता का दावा कर सकें। तो, यहाँ हमारे पास इन प्रशिक्षित और अच्छी तरह से सशस्त्र ग्रीक सैनिकों का मुकाबला फारसियों की सेनाओं से है, जिसमें फारसी साम्राज्य के आसपास के सभी विभिन्न क्षेत्रों से आए लोग शामिल थे।

उनमें से कई शायद बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं हैं। वे पैसे के लिए ऐसा कर रहे हैं, आप जानते हैं। उस सेना, फ़ारसी सेना में कुछ सैनिक शायद खुद यूनानी थे।

और इसलिए, जब लड़ाई कठिन हो गई, तो फारसी सेना भागने लगी। उन्हें लगा कि अपनी जान बचाना उचित नहीं है, खासकर बाद के दौर के सम्राटों को, जिन्हें बहुत ही अयोग्य और भ्रष्ट माना जाता था। यही एक मुख्य कारण था कि सेनाएँ इतनी असंतुलित क्यों थीं।

एक और कारण, बेशक, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, बेहतर कवच है, लेकिन बेहतर तकनीक भी है। इसका संबंध फालानक्स नामक युद्ध रणनीति के विकास से है। अब, फालानक्स ने जिस तरह से काम किया, यहाँ एक तस्वीर है, एक तरह से फालानक्स का चित्रण, ग्रीक सैनिक, अग्रिम पंक्तियाँ, एक बड़ी ढाल से लैस और सुसज्जित थीं, और इन ढालों को एक साथ जोड़ा जा सकता था, और फिर ढालों में छेद के माध्यम से भाले को बढ़ाया जा सकता था।

अब, दिलचस्प बात यह है कि फ़ारसी सेनाएँ अपने घुड़सवारों पर निर्भर थीं, आप जानते हैं, वे महान घुड़सवार थे, और धनुष और तीर पर भी, और उन्होंने बहुत सारे हल्के तीरों का इस्तेमाल किया। कुछ लोगों ने टिप्पणी की है कि फ़ारसी सेनाओं से आने वाले तीरों की बौछार और ग्रीक सैनिकों पर गिरते देखना बहुत प्रभावशाली रहा होगा। लेकिन फालानक्स संरचनाओं के साथ, यूनानी बस अपनी ढाल उठा सकते थे और एक ऐसी दीवार बना सकते थे जो काफी अभेद्य थी।

इसलिए, फारसियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली मुख्य रणनीति इस ग्रीक सेना के खिलाफ काफी अप्रभावी थी। एक और बात जिसका यहाँ उल्लेख किया जाना चाहिए वह है सिकंदर का प्रचार। सिकंदर महान साइरस की रणनीति का छात्र था, और वह वर्तमान फारसी राजतंत्र, प्रशासन को अक्षम के रूप में चित्रित करने और खुद को फारसी साम्राज्य में ज्ञान और व्यवस्था वापस लाने वाला व्यक्ति मानने से बिल्कुल भी नहीं कतराता था।

उन्होंने कुछ डराने वाली तरकीबें भी अपनाईं, और उनमें से एक चीज़ जो उन्होंने की, जो कि एक तरह से चतुराईपूर्ण थी, वह यह कि उन्होंने इन सुपरसाइज़्ड घोड़ों के लगाम बनवाए, जो एक सामान्य घोड़े के लगाम के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले लगाम से कहीं ज़्यादा बड़े थे, और युद्ध के बाद, वे उन्हें युद्ध के मैदान में इधर-उधर छोड़ देते थे। खैर, अफ़वाहें फैलीं कि सिकंदर महान के पास सुपरसाइज़्ड घोड़े थे। हम उन लोगों के सामने कैसे खड़े हो सकते हैं जिनके पास ये विशालकाय घोड़े हैं? तो यह वह चीज़ है जिसमें सिकंदर माहिर था, और यह और अन्य प्रकार की चालें जो उसने लोगों को उससे डरने और लड़ने के बजाय आत्मसमर्पण करने के लिए इस्तेमाल कीं।

इसलिए, सिकंदर एशिया माइनर से होकर आज़ाद होने के बाद, मध्य पूर्व के तट से नीचे की ओर जाता है और फ़िनिशिया के क्षेत्र में जाता है और वह टायर के प्राचीन शहर में पहुँचता है। अब, टायर एक दिलचस्प शहर है जिस तरह से उन्होंने इसे उन दिनों बनाया था। पुराने नियम से, टायर कभी भी इज़राइल या यहूदा के लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय नहीं था क्योंकि वे प्राचीन दुनिया के महान दास व्यापारी थे।

लेकिन, 332 में सिकंदर टायर पहुंचा। अब, टायर जिस तरह से बना है, वहां तटरेखा पर एक मुख्य शहर है और फिर तट से लगभग आधा मील दूर एक द्वीप है। और यह द्वीप बहुत ज़्यादा किलेबंद था।

घेराबंदी से पहले, टायर के लोग अपने बहुत से लोगों, अपने सबसे महत्वपूर्ण लोगों, इत्यादि को द्वीप के किले क्षेत्र में ले जाते थे। वे वहाँ बहुत लंबे समय तक टिके रह सकते थे। उनके पास एक बहुत प्रसिद्ध नौसेना थी, जो मध्य पूर्व की सबसे शक्तिशाली और सक्षम नौसेनाओं में से एक थी।

और वे मूल रूप से उस क्षेत्र में अपने लोगों की आपूर्ति जारी रख सकते थे, बहुत लंबे समय तक। वास्तव में, राजा नबूकदनेस्सर ने टायर की घेराबंदी की; मुझे लगता है कि यह 13 साल का समय था, आखिरकार, उन दोनों ने फैसला किया कि उनके लिए बहुत ही चुका है, और नबूकदनेस्सर चला गया। और अगर नबूकदनेस्सर टायर शहर नहीं ले सकता था, तो सिकंदर महान क्या करने जा रहा था? खैर, सिकंदर ने शुरू में सामान्य तरह की चीज़ें करने की कोशिश की, जैसे कि बजरे भेजने की कोशिश करना, लेकिन टायर के लोगों ने बज्रों को आग लगा दी।

उसने द्वीप पर मिसाइलें दागने की कोशिश की, लेकिन वे पहुँच नहीं पाईं। इसलिए, आखिरकार सिकंदर ने एक पुल बनाया, जिसे हम पुल कहते हैं, जो द्वीप तक जाता है। पूरी तरह से द्वीप तक नहीं, लेकिन द्वीप के इतने करीब कि वह अपने युद्ध इंजन और ट्रेबुशेट और अन्य उपकरण खेल में ला सके।

फिर उन्होंने शहर पर हमला करना शुरू कर दिया। जैसा कि मैंने कहा, उन्हें आखिरकार टायर पर कब्ज़ा करने में लगभग सात महीने लग गए। और जब उन्होंने अपनी जीत हासिल कर ली, तो उन्होंने सबसे पहले शांति के लिए बातचीत करने की कोशिश की।

तो, चलिए इसका श्रेय उसे देते हैं। उसने टायर में कुछ दूत भेजे और टायर के लोगों ने उसके दूतों को मार डाला और उन्हें दीवार के ऊपर फेंक दिया। इससे सिकंदर खुश नहीं हुआ।

और इसलिए, जब उसने आखिरकार शहर की दीवारों को तोड़ दिया, तो उसने अंदर के लोगों का कत्लेआम किया। महिलाओं और बच्चों को गुलामी में बेच दिया गया। और आपको कल्पना करनी होगी कि यहूदा में कुछ लोग थे जो यह सब देख रहे थे और कह रहे थे, जैसा कि भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी, कि यह टायर का अंत होगा।

इसलिए, टायर पर कब्ज़ा करने के बाद, वह तट से नीचे की ओर बढ़ा और गाजा तक आ गया। गाजा ने भी प्रतिरोध किया। गाजा पर कब्ज़ा करने में उसे दो महीने लग गए।

तो, अब उसका नियंत्रण काफी हद तक निकट पूर्व पर है। 332 में हम कह सकते हैं कि सिकंदर अब काफी हद तक निकट पूर्व का राजा है। डेरियस III एक तरह से छिप गया है और अब वास्तव में साम्राज्य नहीं चला रहा है।

और सिकंदर इस बिंदु से आगे बढ़ने के लिए अपना समय लेने जा रहा है। इसलिए, वह मिस्र की ओर आगे बढ़ता है। अब, यहाँ हमारे पास एक किंवदंती है जो उभरती है।

जोसेफस ने यह किंवदंती बताई है, और यह रब्बियों में एक अलग रूप में दिखाई देती है, लेकिन मूल रूप से, किंवदंती कहती है कि मिस्र के रास्ते में, सिकंदर ने यरूशलेम में रुकने का फैसला किया। जैसे ही वह यरूशलेम की ओर बढ़ता है, यरूशलेम में लोग इस बात से भयभीत होते हैं कि क्या होने वाला है, लेकिन यरूशलेम में महायाजक को एक सपना आता है। और इस सपने में, उसने सिकंदर को आते देखा था, और उसे बाहर जाकर उससे मिलने के लिए कहा गया था क्योंकि भगवान ने इस आदमी को दुनिया का शासक बनने के लिए नियुक्त किया था।

और इसलिए, जैसे ही सिकंदर यरूशलेम के पास पहुंचा, महायाजक बाहर आया। जब सिकंदर ने महायाजक को देखा, तो वह महायाजक के सामने घुटनों के बल गिर गया क्योंकि उसने खुद एक सपना देखा था जिसमें उसने इस आदमी को देखा था और उसने देखा था कि उस आदमी के सिर पर प्रभु का नाम, टेट्राग्रामटन, याहवे लिखा हुआ था और उस नाम को देखकर, उसे एहसास हुआ कि यह सबसे महान और सर्वोच्च ईश्वर का प्रतिनिधि था और इसलिए उसने उसका सम्मान किया। बहुत संभव है कि ऐसा नहीं हुआ हो।

बहुत संभव है कि ऐसा नहीं हुआ क्योंकि वास्तव में इस बात का कोई सबूत नहीं है कि सिकंदर के पास उस समय यरूशलेम की ओर अपना रुख मोड़ने का समय या इच्छाशक्ति थी। उसने जो किया वह यह था कि वह मिस्र चला गया और जब वह मिस्र पहुंचा, तो उसे वहाँ एक नए फिरौन के रूप में सम्मानित किया गया। और यह एक दिलचस्प कहानी है क्योंकि सिकंदर अब खुद को मिस्रियों का सच्चा दोस्त साबित करना चाहता है।

और अपने पड़ावों में से एक, वह एपिस बुल को देखने जाता है। यह एपिस बुल की ममी में से एक है। अब, कैम्बिसिस की कहानी याद करें कि कैसे कहा गया था कि कैम्बिसिस ने अधर्म के कार्य में एपिस बुल को मार दिया था? खैर, सिकंदर जाता है, और वह एपिस बुल की पूजा करता है।

और इसलिए, लोग कहते हैं, ओह, यह सिकंदर कैसा आदमी है, आप जानते हैं, वह कितना अच्छा आदमी है, धर्मपरायण व्यक्ति। और उन्होंने उसे अमुन-रा का बेटा घोषित कर दिया। इसलिए वह मिस्र का फिरौन बन गया।

वह एपिस बेल की पूजा करता है। और ऐसा लगता है कि यह संभवतः वह समय है जब सिकंदर का पूर्व की विजय का दृष्टिकोण बदलने लगा है। क्योंकि वह इस समझ के साथ पूर्व की ओर बढ़ा था कि ग्रीक संस्कृति, जैसा कि हम कहते हैं, मधुमक्खियों की घुटने है।

आप जानते हैं, ग्रीक संस्कृति से बेहतर कुछ भी नहीं है। और इसलिए वह पूर्व के इन दयनीय बर्बर लोगों पर ग्रीक संस्कृति थोपने जा रहा था। लेकिन इस समय, वह सोचने लगा है कि शायद कोई बेहतर तरीका हो सकता है।

शायद हम दोनों दुनियाओं को एक साथ ला सकें। और शायद सिकंदर को प्राचीन मिस्र के फिरौन की पोशाक पहने देखकर उसके सैनिक चौंक गए होंगे। लेकिन उसके लिए, उसे ऐसा लग रहा था, मानो वह अपने अस्तित्व में आ रहा था।

उन्हें एहसास हुआ कि उनके पास सिर्फ विजय पाने से कहीं बड़ा मिशन है। उनका मिशन एक मिशनरी या दूरदर्शी जैसा बन गया, हम कह सकते हैं।

किसी ऐसे व्यक्ति की जो दुनिया को एक साथ लाकर एक ऐसा संलयन बना सके जो उसके हिस्सों से भी बड़ा हो। इसलिए, जब सिकंदर मिस्र पर कब्जा कर लेता है, और कुछ समय के लिए वहाँ बिताता है, तो उसे सामरिया में विद्रोह से निपटना पड़ता है। अब, यह कुछ ऐसा है जो बाद में बहुत महत्वपूर्ण होने वाला है।

सामरी लोग बाइबल के अनुसार, विभिन्न देशों से आए लोगों की एक जाति है। अब, बाइबल इस कहानी को इस तरह से बताती है कि 721 ईसा पूर्व में असीरियन लोगों ने इस्राएल के लोगों को निर्वासित कर दिया था, जिसके बाद उन्होंने साम्राज्य के विभिन्न स्थानों से लोगों को लाकर भूमि को फिर से बसाया और बसाया। असीरियन साम्राज्य।

ये लोग आए और अपने बुतपरस्त देवताओं की पूजा करने लगे। खैर, राजाओं की पुस्तक के अनुसार, शेर जंगल से बाहर निकलकर इन लोगों को फाड़ देते थे, जबकि वे अपने बुतपरस्त देवताओं की पूजा कर रहे थे। तो, उन्होंने पूछा, यहाँ क्या हो रहा है? और एक भविष्यवक्ता ने उनसे कहा, ठीक है, समस्या यह है कि आप इस भूमि के देवता की पूजा नहीं कर रहे हैं।

तुम्हें इस देश के भगवान की पूजा करनी चाहिए। और इसलिए, सामरी लोगों ने, जैसा कि इसे कहा जाने लगा, यहूदा के लोगों ने दूतों को यहूदा भेजा और कहा, तुम्हें हमें इस देश के भगवान

के बारे में सिखाने की ज़रूरत है। और इसलिए, यहूदा के लोगों ने सामरिया में पुजारी भेजे जिन्होंने उन्हें प्रभु के मार्ग सिखाए।

और उन्होंने वहाँ अपना मंदिर बनाया और फिर से अपना राष्ट्र स्थापित किया। और अब वे यहोवावाद के एक ऐसे रूप में प्रभु की पूजा कर रहे हैं जो यहूदियों को हमेशा संदिग्ध लगता था। अब क्यों? खैर, पुराने नियम में, यह हमें बताता है कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वे अभी भी अपने मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा करते थे।

यीशु के समय तक, ऐसा नहीं रहा। यीशु के समय तक, इन लोगों ने बुतपरस्ती के सभी संकेतों को लगभग मिटा दिया था। लेकिन समस्या यह थी कि वे यरूशलेम के मंदिर को गलत मंदिर मानते थे।

उनका मंदिर सही मंदिर था, जो गेरिज़िम पर्वत पर था। यरूशलेम का मंदिर गलत मंदिर था। और अगर आप यरूशलेम की पवित्रता में विश्वास नहीं करते, तो आप एक अच्छे यहूदी नहीं हो सकते।

यह उन बातों में से एक थी जिस पर बातचीत नहीं की जा सकती और मैं इसके बारे में बाद में बात करने जा रहा हूँ। किसी भी हालत में, यहूदा के लोगों, यहूदा के लोगों और सामरिया के लोगों के बीच तनाव था। वे एक ही भगवान की पूजा करते थे लेकिन उनके पास अलग-अलग मंदिर थे।

अब, सामरिया, शहर, यह पुराने साम्राज्य या इज़राइल के राज्य की राजधानी थी, सामरिया शहर विद्रोह करता है और उस गवर्नर को मार देता है जिसे सिकंदर ने सामरिया पर नियुक्त किया था। खैर, सिकंदर फिर अपनी सेनाओं के साथ सामरिया की ओर बढ़ा और शहर को जमीन पर गिरा दिया। बहुत संभव है कि ऐसा करने के लिए उसे यहूदियों की मदद मिली हो।

यहूदियों और सामरिया के बीच उबलता हुआ गुस्सा और दुश्मनी फिर से सतह पर आ गई, और बेशक, इससे दोनों पक्षों के बीच संबंधों में कोई मदद नहीं मिली। सामरिया को नष्ट करने के बाद बहुत से लोग गेरिज़िम पर्वत और वहाँ के क्षेत्र और शेकेम के आसपास भाग गए और इसी तरह, और सिकंदर ने उन्हें शांत करने के लिए, उन्हें पैसे दिए और उन्हें फिर से बनाने में मदद की, और दूसरी ओर, दिलचस्प बात यह है कि सामरिया को यूनानियों ने फिर से आबाद कर दिया, इसलिए इस युग में सामरिया अब सामरी शहर नहीं रहा, यह अब एक यूनानी शहर बन गया था। इसलिए, पर्सेपोलिस, बेशक, वह बड़ा लक्ष्य है जिसे सिकंदर को पूरा करना है।

अगर वह फारस पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो उसे फारस जाना ही होगा। वह अभी तक वहाँ नहीं गया है और इसलिए उसने फारस की ओर अपना मार्च शुरू कर दिया। 331 ईसा पूर्व में गौगामेला की लड़ाई में, सिकंदर की सेना ने फिर से मेसोपोटामिया में प्रवेश किया, और इसने सिकंदर के लिए फारस में प्रवेश करने का रास्ता खोल दिया।

सिकंदर को फारस का राजा घोषित किया गया। डेरियस का शाही शहर और उसका महल जलकर राख हो गया। हमारे कुछ स्रोतों से हमें पता चला है कि जब सिकंदर ने कुएं के बाद महल में आग देखी तो उसका मन बदल गया और उसने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन महल

जलकर राख हो गया। इसलिए डेरियस एक बार फिर भाग निकला और सिकंदर ने उसका पीछा किया।

जब ऐसा लगा कि सिकंदर का डेरियस से आगे निकल जाना तय है, तो डेरियस के एक अधिकारी ने राजा की हत्या कर दी और फिर उसने खुद को फारस का राजा घोषित कर दिया। यह बहुत लंबे समय तक नहीं चला क्योंकि सिकंदर ने उसे 329 ईसा पूर्व में पकड़ लिया और मार डाला। अपनी पीठ पर निशाना लगाने जैसा कुछ नहीं है, है न? तो, इन सभी विजयों के साथ, सिकंदर के पास अब अपने साम्राज्य को एकजुट करने का प्रयास करने का कार्य है। इसलिए जब उसने फारसी साम्राज्य के उत्तरी हिस्सों को सुरक्षित कर लिया, तो सिकंदर की मुलाकात उत्तर में इन क्षत्रपों में से एक की बेटी से हुई और वह तुरंत उससे प्यार करने लगा।

उसका नाम रोक्साना था। उसकी खूबसूरती लाजवाब है। बेशक, वह अब तक की सबसे खूबसूरत महिला है।

लेकिन सिकंदर ने उससे शादी कर ली। वह बेबीलोन चला गया, जहाँ उसने अपना मुख्यालय स्थापित किया, और सिकंदर बेबीलोन को अपने नए राज्य का केंद्र बनाने की योजना बना रहा था, जो कि दिलचस्प बात है कि बेबीलोन सुसा या किसी भी फ़ारसी शहर से ज़्यादा बेहतर था, लेकिन शायद एक बात के लिए वहाँ की जलवायु बेहतर थी। लेकिन मूल रूप से पूरे प्राचीन विश्व में बेबीलोन के बारे में एक तरह का अंधविश्वास भी था।

पुराने दिनों में, सुमेरियों और बेबीलोनियों, बाद में अक्कादियों और असीरियों के बीच झगड़े के शुरुआती दिनों में भी, बेबीलोन पर हमला करने में अनिच्छा थी क्योंकि बेबीलोन का मतलब देवताओं का द्वार है, और इसे वह स्थान माना जाता था जहाँ देवता धरती पर आते थे। इसलिए, यह एक तरह से सिकंदर के साम्राज्य की स्थापना के लिए एक उपयुक्त स्थान रहा होगा। एक सख्त राजनीतिक कदम के रूप में, उन्होंने डेरियस III की बेटियों में से एक से विवाह भी किया।

एक औरत। सिर्फ़ एक औरत। उनकी कई पत्नियाँ नहीं थीं।

बहुविवाह कोई ग्रीक परंपरा नहीं थी। इसका एक कारण यह भी था कि आप कई पत्नियाँ क्यों रखेंगे? खैर, आपकी कई पत्नियाँ होंगी, इसलिए आपके बहुत सारे बच्चे हो सकते हैं। ग्रीक संस्कृति में, लोग छोटे परिवार रखने के प्रति जुनूनी थे।

इसलिए, ग्रीस में बहुविवाह कभी प्रचलन में नहीं आया। दूसरी ओर व्यभिचार एक बड़ी बात थी। इसलिए, डेरियस III की बेटी और फिर से इसने वास्तव में उसके बहुत से ग्रीक सैनिकों की भौहें चढ़ा दी होंगी जैसे कि अच्छा इवांस, तुम क्या सोचते हो कि तुम किसी तरह के शेख या कुछ हो? यह साम्राज्य पर उसके शासन को वैध बनाने के लिए है क्योंकि तुम जानते हो कि अपनी वैधता स्थापित करने के तरीकों में से एक विवाह गठबंधन है।

जैसा कि रोक्साना ने खुद को बहुत ही दुष्ट साबित किया और बाद में दूसरी पत्नी की हत्या कर दी। इसलिए, राज्य को और अधिक एकजुट करने के लिए, सिकंदर ने जहाँ भी संभव हो सके, स्थानीय शासकों को बनाए रखा, बहुत हद तक साइरस महान के उदाहरण का अनुसरण करते

हुए। उसने फिर से अपने अधिकारियों को परेशान किया क्योंकि, उनकी समझ के अनुसार, जब आप किसी पर विजय प्राप्त करते हैं, तो आप उनका नेतृत्व करते हैं, आप बॉस बन जाते हैं।

आप स्थानीय नेताओं को चीजों पर नियंत्रण नहीं देते। आप निश्चित रूप से बहुत सारा लूटपाट करते हैं। और सिकंदर इस बात को लेकर बहुत कंजूस था कि उसने अपने सैनिकों को कितनी लूट करने की अनुमति दी।

इसलिए, वह उन्हें जीतने की कोशिश कर रहा था। वह एक तरह से पूर्व के लोगों का उद्धारक बनने की कोशिश कर रहा था। और लोगों को अपने इस दृष्टिकोण, इस एकीकृत विश्व संस्कृति में शामिल करने की कोशिश कर रहा था।

खैर, सिकंदर की महत्वाकांक्षा अंततः उसके सैनिकों के धैर्य से कहीं आगे निकल गई। और जब उसने भारत में घुसने का फैसला किया, तो ऐसा लगा कि शायद वह बहुत आगे निकल गया है। 327 ईसा पूर्व के वसंत में, सिकंदर और उसकी सेना ने भारत में चढ़ाई की।

एक बार फिर, हम पाते हैं कि सिकंदर, यहाँ भारतीय हाथी, युद्ध हाथी, युद्ध हाथियों से बेहद प्रभावित था। उसे लगा कि वे उल्लेखनीय हैं। उसने इनमें से कुछ जीवों को पालतू नाम दिए, जो उसे विशेष रूप से प्रभावशाली लगे।

लेकिन किसी भी तरह, जब वे भारत से होकर यात्रा कर रहे थे, तो भारतीय लोगों के बीच कुछ दिलचस्प अफ़वाहें फैल रही थीं। ज़्यादातर मामलों में, उन्हें यहाँ कोई प्रतिरोध नहीं मिला क्योंकि यूनानियों के बीच हरक्यूलिस के इन्हीं क्षेत्रों से गुज़रने की किंवदंतियाँ थीं।

सिकंदर खुद को हरक्यूलिस के पुनर्जन्म के रूप में पेश करने लगा था, जिससे उसके सैनिकों के बीच कुछ मतभेद भी पैदा हो रहे थे। अब, फिर से, वह स्थानीय शासकों को अपने नाम पर शासन करने के लिए छोड़ रहा है।

सिकंदर को अंततः पता चला कि उसके सैनिक आगे नहीं बढ़ेंगे। और हमें बताया जाता है कि उसने उन्हें बहलाया, उन पर चिल्लाया, वह अपने तंबू में गया और उदास हो गया। पुरानी कहावत है कि सिकंदर तब रोता था जब उसे पता चलता था कि जीतने के लिए अब कोई दुनिया नहीं बची है।

खैर, ऐसा नहीं था कि जीतने के लिए अब कोई दुनिया नहीं बची थी। बात बस इतनी थी कि उसकी सेना अपनी लाइन के अंत तक पहुँच गई थी। और इसलिए अंततः सिकंदर को घर वापस जाने और अपने सैनिकों को आराम करने और जीत की लूट का आनंद लेने के लिए सहमत होना पड़ा। इसलिए, रैंकों में कुछ परेशानियाँ हैं।

सैनिकों को लूटने देने में कंजूसी तनाव का एक स्रोत थी। क्योंकि, आप जानते हैं, यही तो आप करते हैं। अभियान चलाकर आप इसी तरह अमीर बनते हैं।

सिकंदर के सैनिक अमीर नहीं हो रहे थे और वे इस बात से नाराज़ थे। मैसेडोनियन सेनाएँ इस बात से घृणा करने लगीं कि सिकंदर एक फ़ारसी राजा के उत्तराधिकारियों को अपने अधीन करने जा रहा था, क्योंकि, आप जानते ही होंगे कि यूनानी लोग बहुत ही कठोर लोग थे।

यूनान के राजा योद्धा थे। उनके पास विशाल हरम नहीं थे। उनके पास इत्र नहीं था।

उनके पास वे सभी चीज़ें नहीं थीं जो पूर्व के शासन के साथ आती थीं। और इसलिए, सैनिकों को इस बात से नाराजगी थी कि उनका योद्धा राजा एक तरह से डरपोक बन रहा था। फिर, सिकंदर की दिव्यता का पूरा सवाल था।

यह एक गंभीर विवाद का विषय बन गया, यहाँ तक कि इस विवाद के कारण सिकंदर ने अपने एक अच्छे दोस्त की हत्या भी कर दी। अब, यह सब सिकंदर के पूर्व में प्रवेश करने से बहुत पहले शुरू हुआ था।

यह कुछ ऐसा है जो मैं आज भी देखता हूँ जब मैं कुछ ज़्यादा लोकप्रिय पाठ्यपुस्तकें पढ़ता हूँ। बहुत बार, वे कहते हैं कि सिकंदर ने फ़ारसियों की नकल की, देवता बन गया, और उसके साथ भगवान जैसा व्यवहार किया गया। वास्तव में, ऐसा नहीं है।

फ़ारसी राजाओं को भगवान नहीं माना जाता था। असल में, सिकंदर के पिता फिलिप को पहले से ही ग्रीस और मैसेडोनिया में भगवान के रूप में पूजा जाता था।

पूरे राज्य में फिलिप का पंथ काफी प्रचलित था। यूनानियों के लिए मृत राजाओं की पूजा करना कोई असामान्य बात नहीं थी, लेकिन वे जीवित राजा की पूजा करना भी असामान्य नहीं मानते थे।

लेकिन हमारे पास कुछ यूनानी लेखकों के संवादों के ये अद्भुत विवरण हैं। कैसे सिकंदर ने अपने कुछ आदमियों को अपनी प्रशंसा गाने के लिए खड़ा किया था। और अपने कामों की तुलना अतीत के दूसरे महान राजाओं और देवताओं के कामों से की थी।

और, विशेष रूप से, हरक्यूलिस से यह तुलना उनके विक्रय बिंदुओं में से एक बन गई। इसलिए, मिस्र में अमुन-रा के एक दैवज्ञ ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि वह अमुन-रा का दिव्य पुत्र था। और इसलिए अमुन-रा देवताओं का प्रमुख है, आप जानते हैं, यह यूनानियों के लिए ज़ीउस के बराबर है।

और इसलिए यह विचार कि सिकंदर एक अर्धदेव था, उसके अपने मन में अच्छी तरह से बैठ गया था। और शायद उसके कुछ लोगों के मन में भी, हालांकि ज़्यादातर यूनानियों ने इसे स्पष्ट रूप से नहीं देखा। उसके यूनानी सैनिकों ने देखा कि उसके कुछ सैनिक यह सुझाव देने लगे थे कि उसे हरक्यूलिस के अवतार के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

और, फिर से, यह अद्भुत संवाद है जहाँ उसका एक सैनिक कह रहा है, हरक्यूलिस के किस काम की सिकंदर ने नकल नहीं की है और वास्तव में, उससे भी आगे निकल गया है? अब, यदि आप पूरी अलौकिक शक्ति वाली बात को छोड़ दें, तो शायद आप यह तर्क दे सकते हैं। लेकिन वे

जो कहने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है कि इस आदमी ने वे सभी काम करने में कामयाबी हासिल की है जो कोई भी देवता कर सकता है। तो उसे भगवान के रूप में क्यों नहीं पूजा जाना चाहिए? और, ज़ाहिर है, न केवल सिकंदर के कई सैनिक बल्कि वास्तव में निकट पूर्व के कई लोगों के बीच भी, यह बात बहुत दूर तक ले जाती हुई प्रतीत होगी।

इसलिए, भारत में अपने अभियान के दौरान, मैं कहता हूँ कि उन्हें हरक्लिस का पुनर्जन्म माना जाता है। इस बात को लेकर उनका अपने एक आदमी से झगड़ा हो गया, और उस समय वे दोनों नशे में थे। और सिकंदर ने उस सैनिक को मार डाला जो उसका एक भरोसेमंद दोस्त था।

और इसने अलेक्जेंडर को डिप्रेशन में डाल दिया। वैसे, वह व्यक्ति बहुत ज़्यादा डिप्रेशन का शिकार था। और किसी कारण से, उसे लगता था कि डिप्रेशन को ठीक करने का तरीका शराब पीना है, जो वास्तव में कभी काम नहीं करता।

इसलिए, उसके सैनिकों ने कहा, हम बहुत दूर चले गए हैं, चलो घर वापस चलते हैं। इसलिए, वह फारस लौटता है। वहाँ, सिकंदर ने मैसेडोनियन अधिकारियों को मार डाला, जो पीछे रह गए थे और उन्हें चीजों का प्रभार सौंप दिया था।

उसने पाया कि उनमें से कई लोग अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे, इसलिए उसने उन सभी को मौत के घाट उतार दिया। उसने यह भी पाया कि उनमें से कुछ लोग साइरस महान की कब्र को नुकसान पहुंचा रहे थे। और उन्होंने इसके लिए अपनी जान भी दे दी।

उसने अपनी सेना और सरकार दोनों में नेतृत्व के पदों पर फारसी रईसों को नियुक्त किया। ऐसा करने का एक कारण यह भी था कि उसके अपने सैनिक उसके नेतृत्व के खिलाफ़ विद्रोह कर रहे थे। और इसलिए, जब उसने अपने कुछ अधिकारियों को पदच्युत कर दिया और उनकी जगह फारसियों को प्रभारी बना दिया, तो वे निराश होकर वापस आ गए।

कृपया हमें माफ़ कर दीजिए, सिकंदर, ऐसा दोबारा नहीं होगा। और इसलिए, उसने अपने कई मैसेडोनियन अधिकारियों को भी बहाल कर दिया। लेकिन वे सत्ता में भागीदार होने लगे और उन्हें इन फ़ारसी अधिकारियों के साथ सत्ता साझा करनी पड़ी।

हम पहले ही बता चुके हैं कि कैसे उन्होंने डेरियस तृतीय की बेटी से विवाह किया था। लेकिन उन्होंने फारस में एक सामूहिक विवाह भी आयोजित किया था। उनके 80 सबसे महान अधिकारियों और 10,000 सैनिकों ने फारसी महिलाओं से विवाह किया था, जो पूर्व और पश्चिम के मिलन का एक महान सामूहिक प्रतीक था।

अब, मुझे यह कहना होगा कि उनमें से ज़्यादातर शादियाँ अलेक्जेंडर की मृत्यु के बाद भी नहीं टिक पाईं। उनमें से कई एक साल के भीतर ही टूट गईं। लेकिन इस समय, अलेक्जेंडर ने इस शादी में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को शानदार उपहार दिए।

और उसके बहुत से सैनिकों ने इन पत्नियों को अपनाया। और इसे सिकंदर ने अपने अभियान की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि के रूप में देखा, जिसने दुनिया को दिखाया कि वह ग्रीक

संस्कृति और फारसी संस्कृति के इस मिश्रण को बनाने के लिए क्या करना चाहता था। वह सिकंदर के नाम वाले 20 शहरों को खोजने में कामयाब रहा, जो कुछ लोगों को भ्रमित कर सकता है।

लेकिन सबसे बड़ी घटना जो हम सभी को याद है, वह मिस्र में स्थित अलेक्जेंड्रिया है, जो वास्तव में पूर्व में संस्कृति और दर्शन का घर बन गया। तो, चलिए यहाँ थोड़ा और आगे चलते हैं। तो फारस लौटने के कुछ समय बाद, सिकंदर के सबसे अच्छे दोस्त हेफेस्टियन की बुखार से मृत्यु हो गई।

इससे एक बार फिर सिकंदर अवसाद में चला गया और एक बार फिर शराब पीने लगा, जिससे उसने खुद को बाहर निकाला, आप कह सकते हैं, और अधिक अभियानों पर जाकर, अपनी सेनाओं को लेकर, और उन शहरों पर अपना गुस्सा निकालकर जिन्हें उन्होंने इस समय जीत लिया था। आपको आश्चर्य होगा कि शायद उसके कुछ सैनिक इस समय सोच नहीं रहे थे। अब हमें पुराना सिकंदर वापस मिल गया है। अपने दोस्त की मृत्यु के बाद, यहाँ इस संक्षिप्त विजय के बाद, सिकंदर वापस अपने घर बेबीलोन लौट आया।

उन्होंने बेबीलोन में अपने अगले अभियान की योजना बनाई, लेकिन वे इसे पूरा करने के लिए जीवित नहीं रहे। ऐसा लगता है कि कुछ हुआ था, और इस बारे में बहुत अटकलें लगाई गई हैं कि वास्तव में यह क्या था। कुछ लोगों का मानना है कि यह शराब पीने के कारण हुआ होगा, शराब के नशे में उसने खुद को जहर दे दिया, जो निश्चित रूप से संभव है।

यह हत्या हो सकती है। हम नहीं जानते। लेकिन किसी कारण से, सिकंदर की मृत्यु 323 में हुई, 33 वर्ष की आयु में, और ऐसा लगता था कि वह जीवन के शिखर पर था, और फिर भी, कोई आश्चर्य नहीं, वह कुछ अन्य अवसरों पर बीमार था, और फिर भी इस बार यह स्पष्ट था कि इसने उसकी जान ले ली।

इतिहासकार प्लूटार्क ने लिखा है कि सिकंदर को कई बुरे संकेतों ने परेशान किया था, जिससे यह भविष्यवाणी होती थी कि उसकी मृत्यु होने वाली है, लेकिन फिर भी, हमें इन बातों को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। प्लूटार्क सिकंदर के बाद काफी समय तक जीवित रहे। क्या उनकी शराब में जहर मिला हुआ था? यह भी एक संभावना है।

लेकिन सिकंदर के शरीर को शहद में सुरक्षित रखा गया था, और फिर उसे अलेक्जेंड्रिया में दफनाया गया, बेबीलोन से जुलूस के रूप में अलेक्जेंड्रिया ले जाया गया, जहाँ उसकी कब्र, वास्तव में कई शताब्दियों तक बनी रही, और कोई नहीं जानता कि उसके साथ क्या हुआ, दिलचस्प बात यह है कि यह अब नहीं है, लेकिन हम जानते हैं कि यह 300 ई. में भी वहाँ था, इसलिए हम वास्तव में निश्चित नहीं हैं कि इसे कब या कहाँ या किसने नष्ट किया था। इसलिए, सिकंदर का साम्राज्य निश्चित रूप से दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा साम्राज्य था।

यह ग्रीस, मैसेडोनिया, एशिया माइनर, पुराने फारसी कब्जे से होते हुए मिस्र और यहां तक कि भारत के उन हिस्सों तक गया, जिन्हें वह जीतने में कामयाब रहा था। लेकिन हां, एक बार जब वे

सिंधु नदी तक पहुंच गए, तो यहीं पर उनके सैनिकों ने कहा, नहीं, हम उस नदी को पार नहीं करेंगे, हमारा काम खत्म हो गया है। और इसलिए तब वे पीछे हट गए, लेकिन अतीत में किसी भी साम्राज्य की तुलना में बहुत बड़ा।

तो, सिकंदर की मृत्यु के बाद क्या हुआ? खैर, सिकंदर ने अपनी पत्नी रोक्साना को गर्भवती छोड़ दिया था। यह माना जाता था कि अगर उसे बेटा हुआ, तो उसका बेटा वयस्क होने पर सिकंदर के राज्य को संभालेगा। तब तक, सिकंदर के सबसे बड़े सेनापति, पेर्डिकस नाम के एक व्यक्ति को उसके सेनापतियों ने उच्च रीजेंट के रूप में चुना था, न केवल बेटे के वयस्क होने तक साम्राज्य का प्रशासन करने के लिए, बल्कि बच्चे के विकास और शिक्षा की देखरेख करने के लिए भी।

विभिन्न सेनापतियों ने विजित क्षेत्रों को आपस में बांटने का फैसला किया, लेकिन उनमें से कोई भी अपने पास मौजूद क्षेत्रों से विशेष रूप से खुश नहीं था। और इसलिए, इन सेनापतियों ने अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए आपस में लड़ना शुरू कर दिया। इन लोगों को डिया दोची के नाम से जाना जाता है, जिसका अर्थ है उत्तराधिकारी।

और आने वाले सालों में डायडोची यहूदियों के जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाते रहेंगे। इसलिए, लगभग तुरंत ही, हम देखते हैं कि ये जनरल सिकंदर की उदारता की नीति को पलट देते हैं और तुरंत ही मूल निवासियों का शोषण करना शुरू कर देते हैं। यह मिस्र में जनरल टॉलेमी के लिए विशेष रूप से सच था, जिसने मिस्र की भूमि को, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है, एक पैसा बनाने वाली फैक्ट्री के रूप में माना।

मिस्र एक उल्लेखनीय उपजाऊ भूमि थी। हम आमतौर पर मिस्र के बारे में उन तरीकों से नहीं सोचते हैं, लेकिन वास्तव में, रोमन साम्राज्य के दिनों में, इसे भूमध्य सागर का अन्न भंडार माना जाता था। इसलिए, टॉलेमी जैसा महत्वाकांक्षी व्यक्ति देख सकता था कि इस भूमि पर शासन करने और लोहे की मुट्टी से शासन करने से बहुत पैसा कमाया जा सकता है, और यही उसने किया।

321 ईसा पूर्व में पेर्डिकस की हत्या कर दी गई थी। और एक बार जब पेर्डिकस रास्ते से हट गया, तो एक संयमित कारक वह व्यक्ति था जो शांत दिमाग वाला लग रहा था और सभी को लाइन में रखने की कोशिश कर रहा था। खैर, वे पागल हो गए। उन्होंने साम्राज्य को अपने अधिकार के क्षेत्रों, अपने राष्ट्रों और राज्यों में विभाजित करना शुरू कर दिया।

तो, 315 ईसा पूर्व में, हम देखते हैं कि डायडोची ने अपने लिए कुछ बड़े क्षेत्र बनाने में कामयाबी हासिल की। टॉलेमी ने मिस्र को यहीं पर रखा। एंटीगोनस नाम का एक जनरल, जिसे एंटीगोनस द वन-आई कहा जाता था।

इसलिए, उसके पास एशिया माइनर था और वह फिलिस्तीन के अधिकांश भाग पर भी कब्जा रखता था। सेल्यूकस को उस क्षेत्र में पुराना फ़ारसी साम्राज्य और बेबीलोन मिला। एक अन्य जनरल कैसैंडर को ग्रीस के क्षेत्र मिले।

लिसिमाचस के पास मैसेडोनिया के क्षेत्र थे। इसलिए, ये सेनापति लगातार एक दूसरे से लड़ते रहेंगे, लगातार पद के लिए होड़ करते रहेंगे, और इस अवधि के दौरान ये सीमा रेखाएँ तेज़ी से फिर से खींची जाएँगी। बहुत से नामों को सीधा करने की कोशिश करनी होगी और बहुत से लोगों को याद रखना होगा।

हम ऐसा करने की कोशिश नहीं करेंगे क्योंकि, वास्तव में, उनमें से केवल दो ही हमारे लिए अंत में मायने रखेंगे, और वे सेल्यूकस और टॉलेमी होंगे जो क्षत्रपों से राजा बनेंगे। इसलिए, रोक्साना और अलेक्जेंडर के बेटे ने ग्रीस में शरण ली थी।

वह वहां गया जहां कैसैंडर वहां का शासक था। कैसैंडर ने उन्हें 310 ईसा पूर्व में मार डाला। तो, अब सिकंदर के पास, ठीक है, उसका एक भाई था जो कुछ हद तक मानसिक रूप से विकलांग था, और इसलिए कोई भी उसे सिंहासन के लिए खतरे के रूप में गंभीरता से नहीं लेता था। लेकिन इस बिंदु पर, काफी हद तक जनरलों ने सिकंदर के बेटे के लिए साम्राज्य को बचाने का कोई दिखावा नहीं किया।

उनमें से हर एक अपना हिस्सा लेने जा रहा था और जितना हो सके उतना पाने जा रहा था। 306 ईसा पूर्व, एंटीगोनस ने खुद को राजा घोषित कर दिया। अब, यह पहली बार है जब सिकंदर की मृत्यु 323 में हुई थी, इसलिए हमारे पास लगभग दो दशक हैं इससे पहले कि इनमें से कोई व्यक्ति राजा की उपाधि का दावा करने के लिए खुद को आगे बढ़ाए।

अन्य जनरलों ने भी बहुत जल्द खुद को राजा घोषित कर दिया। अब, एंटीगोनस, वह 302 ईसा पूर्व में मारा गया था उसके बाद उसके क्षेत्र लिसिमैचस, सेल्यूकस और टॉलेमी के बीच विभाजित हो गए। इसे जारी रखें।

आखिरकार, सेल्यूकस ने मेसोपोटामिया और सीरिया पर शासन किया। टॉलेमी ने मिस्र पर कब्ज़ा कर लिया और उसने फिलिस्तीन पर भी कब्ज़ा कर लिया। तो, यह एक तरह की गड़बड़ी है जो हमें मिली है और यह अगले कुछ सौ सालों तक जारी रहने वाली है।

इन विभिन्न शक्तियों, इन विभिन्न राजाओं के बीच निरंतर तनाव, निरंतर घर्षण बना रहेगा जो मध्य पूर्व में प्रधानता के स्थान के लिए होड़ कर रहे हैं और उनमें से प्रत्येक सिकंदर के साम्राज्य का सच्चा उत्तराधिकारी बनना चाहता है। बात यह है कि उनमें से कोई भी इस कार्य के लिए सक्षम नहीं था। उनमें से कोई भी सिकंदर जैसा व्यक्ति नहीं था, लेकिन अपने तरीकों से, विशेष रूप से सेल्यूकस और टॉलेमी, वे सक्षम थे।

इस बिंदु पर शायद सक्षम लोग अपने छोटे से क्षेत्र को बनाए रखने के लिए पर्याप्त थे।

यह डॉ. एंथनी टॉमसिनो हैं जो यीशु से पहले यहूदी धर्म पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 5 है, सिकंदर महान।